वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर 2022

- क्या आप अपने विरूद्ध कुछ सुन सकते है?
- श्रीमती सरस्वती देवी जी कनल
- पं हरनरायण जी का पत्र
- लाहौर में हमारे तीर्थ स्थान
- भौतिक जगत
- श्रद्धया जी की चेतावनी
- सत्य धर्म उत्सव
- पाठकों के विचार

इस अंक में

हम अपने विरुद्ध कुछ सुनना पसन्द नहीं करते, हमारे विरुद्ध किया हुआ ईशारा मात्र ही हमें आग बबूला कर देता है। इसका मुख्य कारण हमारा अहं होता है, जबकि बहुत सारी सूरतों में हमारे विरुद्ध राय ठीक होती है वा हो सकती है। इसी विषय को लेकर धर्म जीवन के इस अंक का पहला लेख है, यह लेख विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने लिखा है। श्रीमान जी के सारे ही लेख विशेष होते हैं, अगर किसी महान आत्माओं के प्रति श्रद्धा भाव बढ़ाना हो तो "कहाँ गए वो लोग" पढ़ें, अगर किसी ने गुण देखने का भाव विकसित करना हो तो धर्म जीवन के पुराने अंकों में श्रीमान जी ने अपने उपकारियों के गुणगान किये हैं उनको पढ़ो, अगर किसी ने अपनी तरफ ध्यान लेकर जाना हो तो "नीच जीवन पर चिंतन" पुस्तक पढ़ो।

श्रद्धेय श्रीमति सरस्वती देवी जी ने 25 वर्ष तक दान मांग कर पैसा इकट्ठा करने का एक आदर्श स्थापित किया है। प्रकृति के द्वारा उनके मार्ग में कितने ही विघ्न बाधाएँ और बवंडर खड़े किए गए जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि एक विवाहित स्त्री के लिए किसी एक मिशन (देवात्मा के सर्वश्रेष्ठ मिशन) के लिए प्रतिबद्ध होने का क्या अर्थ हो सकता है। यह लेख उनके कृतज्ञ पति श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी द्वारा श्रीमति कनल के विपरीत परिस्थितिओं के बावजूद डटे रह कर यह काम करते जाने के पच्चीस वर्ष पूरे किए जाने पर लिखा गया था। (यह लेख अंग्रेजी भाषा में था इसका हिंदी अनुवाद हम पाठकों के लिए दे रहे हैं)

पिछले कुछ अंको से हम विशेष आत्माओं के पत्र दे रहे हैं। इस अंक में भी हम हमारे पाठकों के लिए श्रद्धेय श्रीमान पं हरनरायण जी का विशेष पत्र दे रहे हैं जो देवात्मा के देव रूप के दर्शन करवाता है।

अतीत की झलक में हम आपको लाहौर के यादगारी पवित्र स्थानों के दर्शन करवाएंगे।

24 अक्तूबर को भौतिक जगत के संबंध में पाठ और विचार का अंतिम दिन है इसको ध्यान में रख कर हम भौतिक जगत के संबंध में भगवान के आदेश और भौतिक जगत के संबंध में दिन मनाने की विधि दे रहे हैं।

परलोक से श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी की चेतावनी आँखें खोल देने वाली है, जो उन्होंने श्रीमान मुंशी राम जी को लिखवाई थी।

सत्य धर्म बोध उत्सव जो मल्लेका में मनाया गया, उसका संक्षेप वृतांत है।

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 10
अक्तूबर 2022
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

क्या आप अपने विरुद्ध कुछ सुन सकते हैं?

यह ठीक कहा गया है, कि अपनी गल्ती को स्वीकार करना बड़ी बहादुरी का काम है। अपने विरुद्ध सुनना महानता है, और अपने दोष तथा अवगुण बताने वाले को अपने उपकारी के रूप में देखना तथा हृदयगत भावों से उसे धन्यवाद देना बहुत बड़ी महानता है।

क्या हम अपने विरुद्ध सुन सकते हैं? साधारणत: हमें अपने विरुद्ध सुनना तो एक ओर अपने विरुद्ध संकेत मात्र भी आग बबूला कर देता है। हम दु:ख और गुस्से से पागल हो उठते हैं तथा अपने विरुद्ध कहने वाले को जैसे कच्चा ही चबा जाने के लिए लपक पड़ते हैं। ऐसा करके प्राय: सभी लोग अपने आपको ठीक तथा गल्ती बताने वालों को ख़राब और ग़लत कहकर सन्तुष्ट होते हैं। हमारी मनोवृत्ति प्राकृतिक रूप से ऐसी है, कि हमें अपनी प्रशंसा तो बहुत अच्छी लगती है, चाहे वह निपट झूठी ही क्यों न हो, परंतु अपने विरुद्ध कोई भी बात कड़वी और खराब लगती है, चाहे वह कितनी ही ठीक तथा सच्ची क्यों न हो।

अन्धे को अन्धा तथा काने को काना सुनना कदापि अच्छा नहीं लगता, तथा उसे कष्ट तथा आघात पहुंचाने के लिए काफी होता है। जबकि सच्चाई यह है, कि अनेक बार हमारी अपने प्रति धारणा 99 प्रतिशत ग़ल्त होती है, तथा हमारे विरोधियों की हमारे प्रति धारणा सच्चाई के बहुत निकट होती है। अत: हमारे लिए लाभप्रद बात यह है, कि हमें अपने विरुद्ध सुनने का साहस पैदा करना चाहिए। जो ऐसा कर पाते हैं, वह बहुत लाभ में, सुख - शांति तथा सच्चाई में रहते हैं। ऐसा करना हमारे विकास के लिए भी नितान्त आवश्यक है। जो ऐसा नहीं कर पाते, जैसे कि लाखों - करोड़ों मनुष्य नहीं कर पाते, वह सदा दुखी रहते हैं, बहुत घाटे में रहते हैं तथा कभी भी सच्ची उन्नति तथा सफलता का मुंह नहीं देख सकते।

जैसे कोई बीमार अपने रोगों के बारे में जाने बिना स्वास्थ्य का मुंह नहीं देख सकता; उसी प्रकार कोई व्यक्ति अपने दोष, अपनी कमियां एवं अपने अवगुण जाने बिना उनसे मुक्त नहीं हो सकता। जितनी गहराई से कोई अपने दोष देख सकता है, वह नैतिक तथा अध्यात्मिक दृष्टि से उतना ही विकास लाभ कर सकता है। जो अपने विरुद्ध सुन सकना, अपने सुधार के मार्ग को प्रशस्त करना है। जैसे मिठाई मीठी तो होती है, परन्तु साधारणत: मिठाई मनुष्य को

रोगों का घर बना देती है। यद्यपि दवाई कड़वी होती है, तथापि यह रोग मिटाने का काम भी करती है। उसी प्रकार प्रशंसा, बड़ाई, तारीफ मीठी तो लगती है, परन्तु अन्ततः यह मनुष्य का नाश कर देती है। दवा रूपी अप्रशंसा, निन्दा, रोक - टोक कड़ी कितनी भी हो, उसको सुनने, सहने तथा जांचने में हमारी प्रगति का मार्ग निहित है।

जार्ज रोना स्वीडन देश के वासी थे। वह वियाना (आस्ट्रिया देश की राजधानी) में कई वर्षों तक अटारनी रहे। परन्तु दूसरे विश्व युद्ध में वह भाग कर स्वीडन चले गए। उनके पास कोई पैसा नहीं था। उन्हें नौकरी की अत्यन्त आवश्यकता थी। क्योंकि वह कई भाषाएं बोल सकते थे और लिख लेते थे, इसलिए उन्हें Import-Export की किसी बड़ी फर्म में लिखने पढ़ने के लिए Correspondent की नौकरी मिलने की आशा थी। इस आशा से उन्होंने कई स्थानों पर नौकरी के लिए प्रार्थना की। बहुत सारी फर्मों ने जार्ज रोना के निवेदन पर यह लिखकर भेज दिया, कि अभी युद्ध के कारण हमें आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं है। फिर भी हम आपका नाम फाईल में लिखकर रख रहे हैं, ताकि आवश्यकतानुसार आपको सूचित कर सकें। परन्तु एक ने जार्ज को कुछ इस प्रकार लिखा, "जो कुछ तुमने मेरे कारोबार का अनुमान लगाया है, वह सही नहीं है, तुम ग़ल्त भी हो और बेवकूफ भी। मुझे किसी Correspondent की कोई आवश्यकता नहीं है, यदि होती तो भी मैं तुम्हें नहीं रख सकता था, क्योंकि तुम्हे स्वीडन की भाषा अच्छी तरह लिखनी भी नहीं आती, तुम्हारा पत्र गल्तियों से भरा पड़ा है।"

जब जार्ज रोना ने यह पत्र पढ़ा, तो वह गुस्से से पागल हो उठा। इस स्वीडी की यह क्या मज़ाल, कि वह मुझे यह कहे, कि मुझे ठीक से भाषा लिखनी नहीं आती। उसने जो स्वयं पत्र लिखा था, कैसे सम्भव है, कि वह ग़ल्तियों से भरा हुआ हो। जार्ज ने उस मालिक को ऐसा पत्र लिखा, जिससे वह जल भुन जाता। परन्तु उसको पोस्ट न करके उसने अपने आप से कहा कि "जार्ज ज़रा रूको, ज़रा एक मिन्ट यहाँ इन्तज़ार करो, मुझे कैसे पता है, कि वह आदमी ठीक नहीं है। मैंने स्वीडन की भाषा सीखी है, परन्तु वह मेरी मातृ भाषा तो नहीं है। इसलिए हो सकता है, मैंने ग़ल्तियां की हों, जिनका मुझे पता नहीं। यदि मैं ग़ल्तियां करता हूं और मैं ऐसी नौकरी लेना चाहता हूँ, तो मुझे और मेहनत से भाषा सीखनी चाहिए। इस व्यक्ति ने तो मेरी सहायता ही की है, मात्र नागवार (असहनीय) शब्द लिखकर बताया है, तो इससे उसका उपकार या ऋण कम तो नहीं हो जाता। इसलिए मैं उसको धन्यवाद का पत्र लिखूंगा।

इस प्रकार जो जल भुनकर जार्ज ने पत्र लिखा था, वह तो फाड़ दिया तथा एक और पत्र लिखा, जिसमें कहा, कि श्रीमान जी आपकी बड़ी कृपा, जो आपने मुझे पत्र लिखा। विशेषतः उस समय जबकि आपको correspondent की आवश्यकता भी नहीं थी। मुझे अफसोस है, कि मेरा आपकी फर्म के सम्बन्ध में अनुमान ग़ल्त था। मैंने आपको इसलिए लिखा था, क्योंकि मुझे बताया गया था, कि इस फील्ड में आपकी फर्म का नाम सबसे ऊपर है। मुझे यह भी पता नहीं था, कि मैंने पत्र में व्याकरण सम्बन्धी ग़ल्तियां भी की हैं। मुझे अपने आप पर लज्जा आती है, और इसलिए मुझे अफसोस है, तथा मैं लज्जित

हूँ। अब मैं और अधिक ध्यान से भाषा का अध्ययन करूंगा, तथा अपनी ग़ल्तियों को सुधारने का प्रयत्न करूंगा। आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ, कि आपने मुझे स्वयं को सुधारने की राह पर डाल दिया है।"

कुछ दिनों के अंदर ही, जार्ज को उस जन का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था, कि आप मुझसे आकर मिलो। जार्ज वहाँ गए तथा उन्हें वहाँ नौकरी प्राप्त हो गई।

अपने विरुद्ध विचार करने तथा देखने से कैसे सब हालात जार्ज के पक्ष में पलट गए। यदि जार्ज अपने विरुद्ध सोचने के लिए तैयार न होते, तो दोनों तरफ दहकते अंगारों भरे वार्तालाप होते रहते; लाभ के स्थान पर जलन, कुढ़न एवं दु:ख ही प्राप्त होता। तात्पर्य यह है, कि अपनी आलोचना धैर्य पूर्वक सुनने वाला व्यक्ति महान होता है। वह ज़हर जैसे मीठे झूठ की दुनिया में रहना नहीं चाहता, वह कड़वे सच को स्वीकार करना पसंद करता है। महान व्यक्ति ही बड़ी आसानी से अपने विरुद्ध सुन सकते हैं। ओछे व्यक्ति अपनी अलोचना कदापि नहीं सुन सकते।

मान लो, कि आपको कोई आकर लताड़ता है और आपको महामूर्ख (Damn fool) कहकर पुकारता है, तो आपको कैसा लगेगा? स्वभाविक ही आपको क्रोध आएगा, आप लाल पीले हो जाएंगे, दुखी होंगे, परन्तु ऐसी परिस्थिति में इब्राहिम लिंकन के जीवन में एक बड़ी सराहनीय एवं प्रेरणादायक घटना घटी।

इब्राहिम लिंकन अमरीका के महान राष्ट्रपति थे। उनके युद्ध - मन्त्री (war secretary) ऐडवर्ड एम. स्टैंटन थे। एक बार एडवर्ड स्टैंटन ने अपने राष्ट्रपति लिंकन को "डैम फूल" (महा मूर्ख) कहा। स्टैंटन इसलिए दु:खी थे, कि लिंकन उनके विभाग में अनाधिकृत रोक टोक करते थे। किसी स्वार्थी राजनीतिज्ञ को खुश करने के लिए कुछ रैजमैंटों की बदलियों के आर्डर पर लिंकन ने हस्ताक्षर कर दिए थे। स्टैंटन ने न केवल उस आर्डर पर अमल करने से इन्कार कर दिया, वरन् उन्होंने कहा कि ऐसे आर्डर पर लिंकन ही हैं, जिन्होंने हस्ताक्षर कर दिए हैं, मैं इस आदेश का पालन नहीं करूंगा। तब क्या हुआ?

जब लिंकन को बताया गया, कि स्टैंटन ने उनको महामूर्ख (Damm fool) कहा है, तो उन्होंने बहुत शान्ति तथा धैर्य से उत्तर दिया, कि यदि "स्टैंटन ने कहा है, कि मैं डैम फूल हूँ, तो मैं अवश्य ऐसी ही हूँगा, क्योंकि वह प्राय: ठीक होते हैं। मैं खुद जाकर पता करता हूँ।" लिंकन जाकर स्टैंटन को मिले। स्टैंटन ने विश्वास दिलवा दिया, कि वह आदेश ग़लत था। लिंकन ने झट वह आदेश वापिस ले लिया। लिंकन अपनी आलोचना का स्वागत करते थे, जबकि वह आलोचना ज्ञान पर आधारित सच्चे दिल से तथा सहायता भावना से की जाती थी।

आपको तथा हम सबको अपनी आलोचना का स्वागत करना चाहिए, इसके बिना सफलता एवं विकास प्राप्त नहीं होता।

अमरीका के प्रसिद्ध राष्ट्रपति, रूज़वैल्ट कहा करते थे, कि मैं चार बातों में से अधिक से अधिक तीन बातों में ठीक हो सकता हूँ, अधिक नहीं। तात्पर्य यह है, कि वह अपनी गलती को स्वीकार करते थे।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आईनस्टाईन स्वीकार किया करते थे, कि मेरे निकाले परिणामों में 99 प्रतिशत परिणाम ग़लत होते हैं। हमारे भीतर

असीम अपनत्व का प्यार तथा पक्षपात हमें अपने आपको, अपनी राय, अपनी सोच, अपने पक्ष को सदा सदा ही ठीक, निर्दोष एवं सुन्दर देखने के लिए तथा इसी क्षेत्र के अन्दर बन्द रहने के लिए विवश किए रखता है। अपने आपका आकर्षण हमें अपनी सोच की कैद से बाहर जाने ही नहीं देता। अपने आकर्षण का बन्धन हम सब में आलोचना से कड़ी अलर्जी और घृणा उत्पन्न करता है।

जो व्यक्ति अपनी आलोचना नहीं सुन सकता और उसको सहन करके उसके ऊपर विचार नहीं कर सकता, वह किसी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता, तथा कभी महान नहीं बन सकता।

एक विचारवान ने बहुत सुन्दर बात कही है, "हमारे विरोधियों की हमारे प्रति राय या उनका हमारे संबंध में अनुमान, हमारे प्रति राय या उनका हमारे सम्बंध में अनुमान, हमारे अपने प्रति हमारे अनुमान से कहीं अधिक सत्य के निकट होता है।" इसलिए अपने विरूद्ध सुनने वाला, अपने विरोधियों से बहुत कुछ सीख लेता है तथा अपना बहुत बचाव वा भला कर लेता है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी

श्रीमति सरस्वती देवी जी कनल

भगवान देवात्मा की सेविका श्रीमति सरस्वती देवी कनल ने इस वर्ष (1944), बॉम्बे में दान इकट्ठा करने के अपने काम के पच्चीस वर्ष पूरे कर लिए हैं। जब वे इस काम के लिए 1920 में पहली बार बॉम्बे गई थीं, तब तक देव समाज की कोई महिला उनसे पहले वहां नहीं गई थी। किसी ने भी उनके मन में इस विचार के लिए प्रेरणा नहीं दी थी, यह उनका अपना ही भाव था। घर पर भी इसके लिए उन्हें बहुत ही कम प्रोत्साहन प्राप्त था। परन्तु उनकी आत्मा जो इस जोखिम के लिए उत्सुक थी उन्हें - अपने सतगुरू भगवान देवात्मा के लिए एक नये क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अपने भाग्य को अपने हाथों में लेकर उतरने के लिए तैयार कर रही थी। उन्हें भगवान में संपूर्ण व अखण्ड विश्वास था इसलिए मुझे भी बिना बताए उन्होंने एक पत्र के द्वारा भगवान से सम्पर्क किया कि उन्हें बॉम्बे जाने की अनुमति दी जाये - एक ऐसा स्थान जो उन्होंने पहले देखा भी नहीं था। यहाँ तक कि मैं उनका पति भी उनके इस अनोखे फैसले से अनजान था। मैं लाहौर से बाहर गया हुआ था। जब मैं वापिस लौटा और सुना कि उनका नया संकल्प क्या था - तो मैं भी थोड़ा हैरान सा रह गया। मैंने बॉम्बे में ही पढ़ाई की थी। मैं जानता था कि बॉम्बे की आम जनता को एक अनजाने व्यक्ति को, वह भी एक स्त्री को दान देने के लिए - वह भी एक ऐसे कार्य के लिए जिसे बहुत कम लोग जानते थे - मनाना कितना कठिन था। परन्तु वहीं पर वे - एक ऐसी स्त्री जो अभी मुश्किल से ही बचपन से निकली थीं विश्वास और उत्साह से भरी हुई थीं। एक साल पहले ही उन्होंने लाहौर में दान मांगने का काम शुरू किया था - यह भी उनके लिए एक अनजाना स्थान था और उनसे पहले लाहौर क्षेत्र में काम करने वाली किसी भी महिला से कहीं अधिक सफलता प्राप्त की थी।

उस समय उनके पास गोद में एक छोटा बालक था - जो अब बड़ा होकर बॉम्बे में ही व्यापार क्षेत्र में स्थापित हो चुका है। उन्होंने इस

बच्चे को लिया और एक परिचय पत्र बॉम्बे के एक जाने पहचाने नागरिक से प्राप्त करके कि जिस में कहा गया था कि वे एक विश्वसनीय कार्यकर्ता हैं - अपना काम शुरू कर दिया।

उनमें भगवान के प्रति - दृढ़ विश्वास और अपने प्रति उनका दृढ़ निश्चय था जिस के बगैर उनका सफल होना सम्भव ही नहीं था, और वे सफल रहीं। अपने इस पहले दौरे से उनको लगभग 1390 रुपये का दान प्राप्त हुआ*। अगले 101 वर्ष पहले वर्ष 1921 में वे फिर से बॉम्बे गई और उन्होंने दो हजार रुपए से भी ज्यादा दान इकट्ठा किया। उस साल उन्हें पेट की एक गम्भीर बिमारी हो गई। ये दस्त की बिमारी से पीड़ित हो गई, वे शिकारपुर में आराम करने के लिए अपने मायके चली गई। मैंने फिरोजपुर से पत्र द्वारा भगवान की सेवा में सूचना भिजवा दी। उन्होंने कृपा पूर्वक खुशी से उनको सीधा लाहौर ही बुलवा लिया और प्रसिद्ध डॉक्टरों से जांच करवाने का तथा ईलाज का प्रबन्ध किया। डॉक्टरों ने उनके लिए कम से कम दो महीने तक केवल दूध और दही ही भोजन में लेने का परामर्श दिया। वे मेरे पास फिरोजपुर में आ गई और हम दोनों ही यह विशेष ध्यान रखते थे कि वे और कुछ भी भोजन में न खायें। वे इस बिमारी में से निकल आई जिस बॉम्बे की कोई ऐसी गम्भीर बिमारी माना जा रहा था जिसका ठीक होना कठिन होता है। हालांकि कई डॉक्टरों द्वारा इसे एक बहुत गम्भीर बिमारी कहा गया था और स्वयं उन्हें भी यह शक था कि शायद वे बिमारी के इस हमले से जीवित न बचें, पर फिर भी उन्हें कभी बॉम्बे जाने का पछतावा नहीं हुआ जैसे ही वे इस बिमारी से बाहर आई उनका फिर से बॉम्बे जाने का फैसला पहले की तरह ही मजबूत थां यहां तक कि ऐसी गम्भीर बिमारी के दोबारा हमले का डर था यह डर उनके उत्साह को कमजोर नहीं कर पाया।

वर्ष 1922 में उन्हें पता था कि वे गर्भवती थीं मगर उन्हें यह भी बॉम्बे जाने के विचार को छोड़ने का उचित कारण प्रतीत नहीं हो रहा था। इसके विपरीत एक दिन उन्होंने मुझसे कहा "क्या आप भगवान के पास जाकर मेरा मामला उनके सामने रख सकते हैं? मैं बॉम्बे जाने के लिए चिंतित हूँ। किन्तु मुझे आशंका है कि जिस महीने में पुरुष दल बॉम्बे के लिए रवाना होगा उस समय मैं प्रसव के कारण घर में ही सीमित रहूँगी। अगर भगवान कृपापूर्वक मेरा बॉम्बे जाने का समय प्रसव के दो महीने तक स्थगित कर सकें और उसके बाद मुझे एक महिला साथी का साथ और बच्चे को सम्भालने के लिए एक अन्य महिला के साथ जाने की आज्ञा दे सकें तो मैं बॉम्बे जाऊंगी।"

मैंने कहा "क्या आप इसकी कीमत जानती है? दान इकट्ठा करना फूलों की सेज (इतना आसान) नहीं है। प्रतिदिन आपको हज़ारों कदम चलना पड़ता है सीढ़ियां भी चढ़नी पड़ती हैं क्या उसे आपकी सेहत की हानि नहीं होगी? और बच्चे का क्या? केवल दो महीने का बच्चा। बॉम्बे में संसार भर में सबसे ज्यादा बाल मृत्यु दर है।"

उन्होंने कहा "अगर बॉम्बे हमारा घर होता या आपकी नौकरी ही वहां होती तो क्या मैं वहां अपने बच्चे का पालन पोषण नहीं करती?

---

* नोट : आज से 100 वर्ष पूर्व की बात है। जब 1 रूपए की कीमत कितनी थी हम अनुमान भी नहीं कर सकते।

मैं भगवान के पास गया और मैंने यह मामला उनके सामने रखा। भगवान उनके मनोभावों के विषय में जानकर प्रसन्न हुए, परन्तु मुझसे पूछा गया कि यदि बच्चे के साथ कुछ अनहोनी हो जाती है तो आप और वे कैसा अनुभव करेंगे?

मैंने कहा "हम हर अनहोनी त्रासदी के लिए तैयार हैं।" भगवान ने कृपापूर्वक खुशी से मेरे कन्धे को थपथपा कर कहा "जाओ मेरी शुभ कामना व आशीर्वाद आप सबके साथ रहेगा। उच्च शक्तियां आपकी रक्षा करेंगी।"

जैसा व्यवस्था की गई थी वे चली गईं और मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वे स्वयं और बच्चा दोनों लगभग दो महीने के बाद अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करके स्वस्थ व सुरक्षित लौट आए। वह बच्चा अब फौज में लैफटीनेंट है।

उनकी महिला साथी एक के बाद दूसरी कई बार बदलती रहीं, परन्तु वे हर आज़माईश में अडिग रहकर निराश हुए बिना अपने काम की पतवार सम्भाले खड़ी रहीं।

वर्ष 1923 में वे अपने साथ दो महिला साथी सहयोगियों को लेकर गईं। वे अपने दान इकट्ठा करने के काम के लिए एक को सुबह अपने साथ लेकर जाती थीं और दूसरी को दोपहर के बाद। वे स्वयं एक कमजोर शरीर वाली स्त्री जो ऐसे कठोर शारीरिक कष्ट की अभ्यस्त नहीं थीं जो कि इस काम के लिए जरूरी था, प्रतिदिन 10 या 11 घण्टे काम करती थीं और पूरा दिन काम करने के लिए भी तैयार थीं,जबकि उनकी सहयोगी स्त्रियों का दिन में एक ही बार जाना होता था। उस वर्ष उनका दान संग्रह 3000 रुपये से भी अधिक हो गया था।

इसके बाद उनके लिए एक और कड़ी परीक्षा का अवसर आया। वर्ष 1927 में वे जानती थीं कि वे गर्भवती हैं परन्तु उन्हें उम्मीद थी कि वे प्रसव के लिए पंजाब ठीक समय पर लौट आएंगी।

वे अपने सामान्य तरीके से जोश से भरकर कार्य करती रहीं। एक सज्जन व्यक्ति उनकी परिस्थिति को देख कर इतनी गहराई से प्रभावित हुआ कि उसने उनके चरण स्पर्श किए और अपनी पत्नी को कहा "क्या आप देखती हैं कि देव समाज किस प्रकार की महिलाएं तैयार कर रही है?" उनके दान कर्ताओं में से बहुत से लोग उनके प्रयासों की तो सराहना करते थे, किन्तु उनके इस कदम से सहमत नहीं थे। डेढ़ महीने के कठिन परिश्रम के बाद जब उन्होंने एक डॉक्टर की सलाह ली जो कि हर वर्ष उनको दान भी देता था कि क्या वे सुरक्षा पूर्वक वापिस पंजाब लौट सकती हैं, तो उसने मना किया। उन्होंने आँखों में आंसू भरकर मुझे यह बताया। उसके बाद मैं उन्हें कई प्रमुख डॉक्टरों के पास लेकर गया पर उन सबकी भी यही राय थी कि उन्हें प्रसव के लिए बॉम्बे ही रुकना चाहिए। उनके लिए कठोर आज़माईश थी। मैं जानता हूं, कैसे उनके आंसू बह रहे थे कि वे बॉम्बे में ही अटक जाएंगी, अपने सभी बच्चों से दूर और मुझसे भी दूर, क्योंकि मैं एक संस्था का मुखिया था और इसलिए मुझे भी वापिस लौटना पड़ रहा था। मेरी चिन्ता और पीड़ा की कल्पना की जा सकती है। एक खैरायती अस्पताल में उनका प्रसव हुआ और वहाँ उन्होंने मेरी वर्तमान में सबसे छोटी पुत्री को जन्म दिया। जब वे वहाँ बॉम्बे के उस अस्पताल में थीं तो केवल मेरी एक बहन उनके पास थीं। परन्तु इस अकेलेपन और दुःखद स्थिति जिसमें वे पड़ गई थीं - के बावजूद भी

कभी एक पल के लिए भी उन्हें समाज के काम के लिए बॉम्बे जाने का पछतावा नहीं हुआ। वे काम छोड़ कर घर रहने के लिए कोई भी बहाना नहीं ढूंढती थीं। वे किसी भी बहाने को अपने काम के रास्ते में नहीं आने देती थीं।

वर्ष 1931 में उनके लिए एक नई आज़माईश का नया अध्याय सामने आया। उनके साथ लगभग एक साल की छोटी बच्ची थी और अचानक एक गम्भीर बिमारी के लक्षण उसमें प्रकट होने लगे। बॉम्बे में हमारे पास रहने के लिए कोई घर नहीं होता, हम हमेशा धर्मशालाओं में कमरा लेकर ठहरते हैं। हमें उस प्यारी बच्ची को लेकर उसी गम्भीर अवस्था में दूसरी धर्मशाला में जाना पड़ा क्योंकि पहले वाली धर्मशाला में हमारे ठहरने की अवधि समाप्त हो चुकी थी। वह प्यारी बच्ची उस बिमारी के पंजे से नहीं निकल पाई और उसकी मृत्यु हो गई। मेरी पत्नी अंतत: एक स्त्री ही है। एक मां के रूप में उनमें बच्चे के लिए एक मां की कमज़ोरी है। जिस तरीके से वे अपने मृत बच्ची को गोद में लेकर गईं उसने मुझे पूरी तरह से तोड़ दिया। बच्ची की मृत्यु रात में हुई थी और सुबह होने तक यह प्यार करने वाली मां उसे अपनी बाहों में लेकर ही बैठी रही और पूरी रात एक पल के लिए भी नहीं सोई।

हम लोग सुबह अपने उस बच्चे को दफनाने के लिए हिन्दु शमशान घाट पर ले गए। इस प्रकार से बॉम्बे ने उनसे उनके एक बच्चे के रूप में (चुंगी) कर वसूल कर लिया था, पर यह इतना भारी दु:ख भी उनको उनके काम से विमुख नहीं कर पाया। जिस दिन हमने अपने प्यारे बच्चे को दफनाया था। उसी दिन शाम को वे अपने काम पर चली गईं। उन्होंने कहा "यह दु:ख मेरा व्यक्तिगत मामला है। इसके भगवान के काम में हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहिए।" हाँ यह सच है कि वे प्रतिदिन काम पर जाती थीं परन्तु रात में वे आँसू बहा कर अपने मन को शान्त करती थीं। जिस दिन हमने बॉम्बे छोड़ा, मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकता। जब हम उस धर्मशाला के दरवाजे से बाहर निकल रहे थे तो वे रुक गईं और दु:ख से भरकर बहते हुए आँसूओं के साथ कहने लगी "ओह बॉम्बे मैं यहां से खाली बाहें ले कर वापिस जा रही हूँ। मैं इतनी बड़ी कुर्बानी के लिए तैयार नहीं थी।" स्वाभाविक है मैं भी गहराई से विचलित हो गया मैंने उनसे इतना ही कहा "चलो अब हम चलते हैं। यहां सब खत्म हो गया है, अब कोई सहायता नहीं मिल सकती।"

परन्तु जैसे कि प्रकृति उनकी इन सब कुर्बानियों से भी मानों संतुष्ट नहीं हुई थी, 31 मई 1933 को उन्होंने अपना एक बहुत प्यारा 20 साल का पुत्र खो दिया। हां वे एक बहुत मजबूत माँ नहीं हैं, अपने बच्चों के लिए उनमें बहुत बड़ी कमजोरी है। परन्तु फिर भी उन्होंने कभी भी अपनी इस बड़ी कमजोरी को अपने भगवान के प्रति अपने कर्तव्यों के रास्ते मे नहीं आने दिया। उनका यह सदमा इतना बड़ा और गहरा था कि उनमें मानसिक स्वास्थ्य खोने के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे। अगस्त का महीना आया। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे बॉम्बे जायेंगी? उन्होंने शांतिपूर्वक उत्तर दिया हाँ मैं जाऊंगी। मुझे यह निश्चित था कि यह अच्छा काम ही उनकी तकलीफ़ों का एकमात्र इलाज सिद्ध होगा। वे बॉम्बे गईं। उन्हें वहां दौरे पड़ते थे। यहां तक कि कई बार रास्ते में भी उन्हें अनुभव होता कि कोई चीज़ उन्हें बार बार डरा रही है और वे बुरी तरह कांपने लगती थीं। जब उन्हें विक्टोरिया में

बिठा कर वापिस लाया जाता था। वे बहुत बेहाली की हालत में वापिस लाई जाती थीं। परन्तु यह दौरे लगातार नहीं पड़ते थे इसलिए वे अपने काम में भी व्यस्त रहती थीं। बॉम्बे में अपना काम खत्म करके वे मेरे साथ कराची आ गई। तब एक सेविका उनके साथ जाती थी जब वे दान इकट्ठा करने जाती थीं। मैंने उस सेविका से हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि वह उनके साथ जाएं और जितना भी समय वे लगाना चाहें उनके साथ रहें। मैंने कहा "तुम उन्हें मेरे लिए और समाज के लिए बचा सकती हो। केवल यह दान मांगने का काम ही उन्हें गहरे घने दु:ख और दौरे पड़ने की तकलीफों में से बाहर निकाल सकता है।" कौन उनके कष्टों और मेरी चिन्ताओं को कभी समझ सकता है।

परन्तु अभी इससे भी बड़ी कुछ आज़माईशें उनके सामने आनी बाकी थीं। 1941 में मैं गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। मुझ पर हर्निया के उलझने का हमला हुआ। ऑपरेशन तो सफल रहा परन्तु घाव बिगड़ कर जहरीला हो गया। मैं अनजान था कि उस अवस्था में मेरी स्थिति लगभग निराशाजनक हो चुकी थी। परन्तु क्योंकि समाज के कार्यों के कारण मैं बहुत चिंतित रहता था, एक दिन उन्होंने देव समाज के सैक्रेटरी से हाथ जोड़ कर कहा" सम्मान के योग्य साधु जी भगवान के पास तो बहुत से कनल होंगे परन्तु मेरे लिए और मेरे बच्चों के लिए तो एक ही कनल हैं। कृपा करके समाज के हर मामले को इन से छिपा कर रखें क्योंकि यह बहुत चिंता करते हैं।" मैं कुछ बेहतर हुआ और फिर दो महीनों के बाद मुझे सोलन ले जाया गया। मुझे लगातार बुखार आ रहा था। जुलाई के महीने में उनकी बहन डॉ. सत्ती बाई MBBS जो विशेष रूप से मेरा ईलाज करने के लिए आईं थी सोलन में एक खड्ड में जो लगभग 150 फीट गहरी थी, बुरी तरह से गिर गई और उनके शरीर की कई हड्डियां टूट गई। यह एक चमत्कार ही था कि वे जिन्दा बच गई। मेरी पत्नी उन्हें ले कर शिमला चली गई मुझे उनकी माता व उनकी बहन के जिम्मे पर छोड़ कर। मैं जानता हूँ कि उन्होंने हम दोनों की बिमारी में से बाहर निकालने के लिए कितनी बहादुरी से लड़ाई लड़ी है। यह सब मुसीबत जुलाई में आई थी और अगस्त में उनको बॉम्बे के लिए निकलना था। जैसे ही उन्हें यह अनुभव हुआ कि हम खतरे से बाहर हैं उन्होंने समाज के काम के लिए बॉम्बे जाने की अपनी आकांक्षा (संकल्प) को अभिव्यक्त कर दिया। इस प्रकार से उन्होंने हमें सुरक्षित हाथों में सौंप कर बॉम्बे जाने का साहस किया था। उन्होंने वहां एक महीना भर काम किया और जल्दी ही उस काम को समाप्त किया और फिर से हम दोनों की सेवा करने के लिए आ गईं।

अभी एक और भी ज्यादा गम्भीर आज़माईश उनका इन्तजार कर रही थी। वर्ष 1942 में हमारे प्रिय पुत्र प्रोफेसर एस.पी. कनल के साथ एक गम्भीर दुर्घटना हो गई। उनको पलस्तर में रखा था। उस समय मुझे एक बहुत बड़ा डर लग रहा था कि उनके इस प्यारे पुत्र की गम्भीर बिमारी कहीं उनकी सारी ताकतों का तोड़ने वाला आखरी आघात ही न साबित हो जाए। परन्तु जैसे ही उनका बॉम्बे जाने का समय नजदीक आया और उन्होंने अनुभव किया कि उनका पुत्र अब खतरे से बाहर है और सुरक्षित हाथों में है वे बॉम्बे के लिए चली गईं। कितनी स्त्रियां हैं जो यह सब करने का साहस व हौंसला रखती हैं। इसी तरह से जो भी परिस्थितियों के

उल्टफेर या बड़े सदमें आए हों उन्होंने कभी भी अपने कर्तव्यों का झण्डा अपने हाथों से गिरने नहीं दिया।

मैं उच्चतर शक्तियों का धन्यवादी हूँ कि उन्होंने जीवन के सभी आंधी तूफानों का सामना किया है। वे बॉम्बे के अपने काम को कभी टालना या छोड़ना नहीं चाहती थीं, कभी भी नहीं। अभी इसी साल एक दिन उनकी हालत गम्भीर हो गई थी, वे सांस भी मुश्किल से ले पा रही थीं हम खार के इलाके में थे, बड़ी मुश्किल से उन्हें धर्मशाला में लाया गया। उनकी रात भी बड़ी कठिनाई में बीती। वे एक दिन आराम करने के लिए विवश हो गई। डॉ. एच. वी. सोनपार जी ने उनका ईलाज किया और उन्हें इस तकलीफ में से बाहर निकाला। उसके अगले ही दिन वे फिर से अपने काम के लिए निकल गई। बॉम्बे में रहते हुए उनके शरीर में दर्द होता रहता हैं उनका काम आज की युवा लड़कियों को भी थका देगा। जबकि अब वे पचास वर्ष की हो गई हैं और कमजोर भी हैं। उनके सभी बच्चे चाहते हैं कि वे आराम करें, परन्तु इस क्षेत्र में भगवान के काम को वे असल में अपना काम ही मानती व विश्वास करती हैं।

मैं खुश हूं कि उन्होंने अपने जीवन के सभी सम्भव तूफानों का मुकाबला करते हुए, बॉम्बे में अपने दान एकत्र करने के इस काम के पच्चीस वर्ष पूरे कर लिए हैं, वह भी लगातार और बिना कोई नागा किए। भगवान की जय हो! जिनकी शक्ति ने उन्हें इन सभी आज़माईशों को सहने और इनमें से निकलने के योग्य बनाया।

- श्रीमान पी.वी. कनल जी

पं हरनरायण जी का पत्र (8.06.1902 ई.)

मेरे अति श्रद्धा और पूजा के योग्य श्री पिता जी! आप का देव जीवन क्या आपके अद्वितीय देव अनुरागों के विचार से और क्या आत्मा के संबंध में मिथ्या कल्पना रहित और विज्ञान मूलक सत्य ज्ञान के विचार से पूर्णत: निराला और अद्वितीय है। मुझे आत्मा के संबंध में नाना प्रकार की मिथ्या गप्पों से भरी हुई दुनिया एक सुनसान जंगल की न्याईं प्रतीत होती है, और जैसे हज़ारों मीलों तक रेत से घिरे हुए अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान में किसी पानी के प्यासे और छाया के चाहने वाले मुसाफिर को अपने सामने किसी पानी के चश्मे वा छायादार वृक्षों के किसी झुंड को देखकर बहुत आशा मिलती है, वैसे ही इस संसार में आप का वजूद मुझे एक अमृत का स्रोत, और आपकी समाज के लोग उन वृक्षों की न्याईं प्रतीत होते हैं, जो आप के जल से इस वीराने में उत्पन्न हो गए हैं। तब मैं और कहां जाऊं, और अपने हृदय की भूख और प्यास कहां और किससे मिटाऊं, और जीवन की रक्षा और उन्नति के लिए जीवन रस कहाँ से पाऊं? मुझे आपके और आपकी समाज के भिन्न कोई ठिकाना दिखाई नहीं देता। मेरा हृदय कई बार ऐसे भाव से भरकर और आपको स्मरण करके ऐसी आकांक्षा करता है, और कई बार बहुत ज़ोर से करता है, कि मैं आपके चरणों के साथ लिपट जाऊं।

अतीत की झलक

लाहौर में हमारे तीर्थ स्थान

1947 में हमारे देश को आज़ादी के साथ साथ बंटवारे की महा भयानक त्रासदी में से भी गुजरना पड़ा। देव समाज के लिए भी यह बंटवारा बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। हमारे सारे पवित्र यादगारी तीर्थ स्थान पाकिस्तान में रह गए। श्री देवगुरू मैमोरियल मंदिर, देवाश्रम, पवित्र समाधी, प्रचार हाल, श्रीमान देवत्व सिंह कर्मचारी निवास, देव समाज के स्कूल और कालेज लाहौर में रह गए। सिंध, रावलपिंडी, मिंटगुमरी आदि स्थानों में हमारे साधन मंदिर भी वहीं रह गए। हम हमारे पाठकों को इस लेख के द्वारा देव समाज के इन इतिहासिक स्थानों के इतिहास के दर्शन करवाएंगे।

सबसे पहले हमारे लिए ब्राह्म मंदिर का वो स्थान पवित्र तीर्थ है जहां मनुष्य सृष्टि के सरताज ने एक बहुत बड़ी पब्लिक सभा में अद्वितीय जीवनव्रत ग्रहण किया था। इस सभा में भगवान ने निम्नलिखित जीवनव्रत ग्रहण किया था :

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे;"

जग के उपकार में ही जीवन यह जीवनव्रत ग्रहण करना कोई साधारण घटना न थी विश्व का सारा विकासकारी विभाग इसके लिए संग्रामशील था। भगवान ने खुद फरमाया था: "विश्व की जो विकासकारी प्रकृति इस शुभ घटना लाने के लिए, लाखों वर्ष से संग्राम कर रही थी, उसके प्रत्येक विभाग ने मानों सहत्र 2 मुख से मुझ पर अपना आर्शीवाद दिया। और इस गुप्त परन्तु महान् आशीष को पाकर मेरा हृदय धन्य-धन्य होकर उछलने लगा, और निर्मल और उच्च आनन्द की अपूर्व लहरें लेने लगा। मैंने अनुभव किया कि अब मेरे जन्म लेने का महान् उद्देश्य, एक सीमा तक सफल हुआ।"

लाहौर में ही जब पूजनीय भगवान ने 16 फरवरी 1887 ई को देव समाज की स्थापना की थी। उस समय भगवान के पास कोई जमीन वा स्थान नहीं था कि जहां पर वो मानवता की सर्वोच्च भलाई का काम कर सकें। नेचर ने अपने गुप्त और महान इन्तजाम से एक विधि निकाली। लाहौर में ही एक दिन (3 दिसम्बर 1887 ई को) बहुत मौके की जमीन की निलामी हो रही थीं। कई दिन तक भगवान को इसकी खबर नहीं हुई, फिर एक दिन श्री पं उद्योमिश्रजी ने भगवान को खबर दी कि एक बहुत अच्छी जमीन की निलामी हो रही है। भगवान को भी जमीन पंसद आ गई। पूजनीय भगवान ने 3185 रुपये में नीलामी में वह टुकड़ा खरीद लिया। इस टुकड़े की कीमत अदा करने के लिए पूजनीय भगवान के पास उस वक्त रुपए भी मौजूद नहीं थे, लेकिन भगवान देवात्मा ने लाहौर के एक रईस से (जोकि पूजनीय भगवान के संबंध में बहुत श्रद्धा और सम्मान का भाव रखते थे) यह रुपए कर्जे पर ले लिए। जनवरी सन् 1888 के महीने में ही उन्होंने इस ज़मीन को, जो उस वक्त बहुत खराब और ना हमवार हालत में थी, हमवार कराकर उस पर एक आलीशान मंडप तैयार कराया और देवसमाज का पहला सालाना उत्सव इसी मंडप में खूब धूमधाम से मनाया गया। देवसमाज के पहले सालाना उत्सव के मौके पर देव-धर्म प्रचार का बुनियादी पत्थर रखते वक्त भगवान देवात्मा ने जो एक एड्रेस दी थी, उसमें से कुछ पंक्तियाँ हम

नीचे दर्ज करते हैं :

"ऐ हाज़रीन, मैं तुम्हें इस मुबारक दिन में अपनी और अपनी समाज की तरफ से मुबारकबाद देता हूँ। यह मुबारकबाद सिर्फ चंद आदमियों के लिए नहीं बल्कि तमाम मुल्कों के लिए है। तमाम मुल्क इस चश्मे से जो यद्यपि इस वक्त बहुत हकीर मालूम होता है, लाभान्वित होगा। इतिहास इस अमल की शाहदत देता है कि जो चीज़ें आज बहुत बड़ी और महान दिखलाई देती हैं, वह एक दिन बहुत छोटी थीं और उस हालत से तरक्की होकर मौजूदा हालत तक पहुँची हैं। इस ईतवार से मैं आज के मौके को एक ऐतिहासिक घटना रव्याल करता हूँ।"

इसी स्थान पर फिर देवाश्रम बना, देव समाज का हैड ऑफिस बना। इसी स्थान पर मनुष्य सृष्टि के सरताज का निवास स्थान बना। यहीं पर उनकी पावन समाधि बनी। यह सारे स्थान हमारे लिए पूजनीय हैं।

श्री देवगुरू भगवान मैमोरियल मंदिर – यह बड़ा आलीशान मंदिर उस समय ज़मीन की कीमत को मिलाकार प्राय: 1 लाख रूपयों की कीमत का देवसमाज के परम पूजनीय बानी भगवान देवात्मा के 32 साला काम की यादगार में लाहौर में सन् 1915 में तैयार किया गया था और भगवान देवात्मा के 65वें जन्म महोत्सव पर इसके खोलने का शुभ अनुष्ठान संपन्न किया गया था। इस मंदिर में एक बहुत बड़ा हॉल 15 x 50 फीट का बना हुआ था और इसके पूरब और पश्चिम की तरफ बहुत बड़े-बड़े कमरे देवसमाज के दफ्तरों और देव-समाज के कर्मचारियों की रिहाइश के लिए बने हुए थे और इसके अतिरिक्त दूसरी मंजिल पर एक उपासनालय बना हुआ था कि जिसमें देवसमाज के सेवकों और सेविकाओं आदि की सभाएँ होती थी। यह सारा मंदिर देवसमाज के बहुत बड़े गौरव को ज़ाहिर करने वाला था। इस मंदिर में हर साल भगवान देवात्मा के जन्म-महोत्सव पर सभाएँ होती रहती थी कि जिनमें पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, सरहदी सूबा, शओंही सूबा दिल्ली आदि के बहुत से स्थानों से सैकड़ों सेवक-सेविका, सहायक और अन्य श्रद्धालु जन शामिल होकर हर साल लाभ उठाते थे और साधारण जनों के हित के लिए भी बहुत बड़ी-बड़ी सभाएँ होती थी और स्वयं भगवान देवात्मा अपनी देववाणी के द्वारा अपने सेवकों और सेविकाओं आदि का वह हित साधन करते रहे हैं जो इस दुनिया में और कहीं प्राप्त नहीं होता।

लाहौर में देवत्व सिंह कर्मचारी निवास :– यह कर्मचार निवास देवसमाज के ब्रत्ती कर्मचारी श्रीमान देवत्वसिंह जी की यादगार में श्री देवगुरू भगवान मेमोरियल मंदिर के अहाते में उसके दक्षिण की ओर तैयार किया गया था कि जिसके खोलने का अनुष्ठान स्वयं भगवान देवात्मा ने दिसम्बर सन् 1924 में अपने 74वें जन्म-महोत्सव पर अपने मुबारक हाथों से संपन्न किया था और श्रीमान देवत्व सिंह जी की ज़िंदगी में उनके देवप्रभावों से जो उच्च परिवर्तन आया था और देवसमाज के लिए उनका जीवन बहुत सेवाकारी बन गया था, उसके संबंध में उस समय उन्होंने एक बहुत हितकर और तेजस्वी व्याख्यान देकर अपने सेवकों और सेविकाओं का बहुत बड़ा कल्याण साधन किया था।

देव समाज के इस तीर्थ स्थान को 1947 के बाद कैसे हमारे धर्म संबंधियों ने बचाने की कोशिश की, उसमें श्रीमान सोनपार जी, श्रीमान गुरबख्श सिंह जी, कुमारी सुशीला देवी जी, पं

गिरवर प्रसाद जी का क्या योगदान था उसका इतिहास हम अगले किसी अंक में देने की आशा करते हैं। आओ देव समाज के मेरे प्यारे धर्म संबंधिओ शुभ कामनाएं करें कि ऐसे हालात बनें कि उन पवित्र स्थानों के दर्शन हम फिर कर सकें और धन्य धन्य हो सकें।

भौतिक जगत के संबंध में आदेश

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अपने घर की सब वस्तुओं को शुद्ध और सुन्दर अवस्था में रखें।

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अपने घर की सब वस्तुओं को अपने अपने स्थान और सम्बन्ध में सजाकर सुश्रृंखला और परिपाटी के साथ रखें।

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है कि वह अपने वा किसी और के व्यवहार के लिए जिस वस्तु को उसके निर्दिष्ट स्थान से उठायें, उसे व्यवहार के अनन्तर फिर वहीं रखें।

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी प्रत्येक वस्तु की उचित रूप से रक्षा करें।

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है कि वह भौतिक यज्ञ सम्बन्धी धन, धरती आदि विविध पदार्थों को औरों से प्राप्त होकर, अथवा उनके उपार्जन में आप प्रवृत होकर, अपने हृदय को उनके हानिकारक मोह से सदा सुरक्षित रखें।

० भौतिक यज्ञ साधन कर्ता के लिए आवश्यक है, कि वह भौतिक जगत में पृथ्वी, वायु, चन्द्र और सूर्य से जितने जितने प्रकार के उपकार लाभ करता है, उन्हें विचार के द्वारा बारम्बार अपने सन्मुख लाकर उनके सम्बन्ध में अपने आपको उपकृत बोध करने और उनके लिए, जहाँ तक सम्भव हो, अपने आपको सेवाकारी बनाने का अभ्यास करें।

भौतिक व्रत

1 - व्रत साधन के लिए अपने साधनालय अथवा किसी स्थान को पहले से परिष्कृत और सुसज्जित करना चाहिए।

2 - व्रत के दिन जहां तक सम्भव हो, वहां तक प्रात: काल में ही व्रत का साधन करना चाहिए।

3 - व्रत के दिन अपने शरीर को शुद्ध करके और उजले वस्त्र पहनकर साधन के लिए बैठना चाहिए।

4 - व्रत के दिन नीचे लिखी हुई विधि के अनुसार व्रत का सम्मिलित साधन करना चाहिए :-

(1) श्री देवगुरू भगवान् की छवि के सन्मुख खड़े होकर पुष्पहार के द्वारा उनका अर्च्चन।

(2) देवस्तोत्र का उच्च स्वर के साथ सम्मिलित पाठ व गान।

(3) श्री देवगुरू भगवान् को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम।

(4) श्री देवगुरू भगवान से व्रत की सफलता के लिए आर्शीवाद प्रार्थना।

(5) यज्ञ सम्बन्धी आदेशों का एकाग्रता के साथ धीरे धीरे पाठ अथवा भौतिक जगत के सम्बन्ध में कोई उपदेश।

(6) इस यज्ञ के साधन से प्रत्येक साधन

कर्ता ने अपना मोक्ष व विकास विषयक जो जो कुछ शुभ साधन किया हो, उस पर चिन्तन और उसके सम्बन्ध में भौतिक यज्ञ साधन कर्ता श्री देवगुरू भगवान् के प्रति धन्यवाद आदि भावों का प्रकाश।

(7) आगामी वर्ष में इस जगत के सम्बन्ध में अपने आपको और भी विकार रहित और हितकर बनाने के निमित्त आकांक्षा और आर्शीवाद प्रार्थना।

(8) महा वाक्य का उच्चारण :- ॐ उच्चगति, उच्चगति, एकता, एकता, परम एकता।

5 - व्रत के दिन और दिनों की अपेक्षा उत्तम भोजन आहार करना चाहिए।

6 - व्रत के दिन संध्या से कुछ पहले एक और साधन करना चाहिए।

(1) श्री देवगुरू भगवान् की छवि के सन्मुख विनय पूर्वक खड़े होकर बाहर की भौतिक ज्योति की तुलना में उनकी आत्मिक देव-ज्योति की विशेषता और महिमा पर संक्षिप्त कथन करके अपने भावों का प्रकाश करना चाहिए।

(2) आरती का गान करना चाहिए।

(3) श्री देवगुरू भगवान् को विनय पूर्वक प्रणाम करके महा वाक्य* का उच्चारण करना चाहिए।

(4) यथा रूचि अपने अपने घरों में परिपाटी के साथ दीप माला करनी चाहिए।

(* इसके अनन्तर भगवान् देवात्मा ने ही इस महावाक्य को छोड़कर इसके स्थान में "भगवान् देवात्मा की जय" चार बार उच्चारण करने का आदेश दिया है।)

परलोक से श्रद्धेया कुमारी प्रेम देवी जी की चेतावनी

प्यारे सम्बन्धियों! मत भूलो झूठी इज्जत के भरोसे, मत भूलो विनाशकारी सम्बन्धियों के भरोसे, मत भूलो अपनी किसी जायदाद और किसी मरतबे के भरोसे। सन्मुख लावो उन मर्तबा और इज्जतवालों को जो इस दुनिया के भीतर बहुत बड़े मर्तबे और बहुत बड़ी इज्ज़त वाले रह चुके हैं, वह कहाँ हैं? उनका कोई खोज भी ढूंडा नहीं मिलता। कहाँ हैं सिकन्दर और दारा? कहाँ हैं कारून बादशाह कि जिसके पास चालीस खज़ाने जमा थे? कहाँ हैं महमूद गज़नवी जिसने हिन्दुस्तान पर हमला करके यहाँ के लोगों को लूट-खसूट कर अपने आपको बहुत बड़ा दौलतमंद और बहुत बड़ा अमीर बनाया था? उसका परलोक में कहीं नामो निशान नहीं मिलता। वो महमूद गज़नवी - इतने सामानों का मालिक, इतने बड़े लश्कर का अफसर - जिन भयानक अज़ाबों को भोग भोग कर उसकी हस्ती खत्म हुई है, ये सब दृश्य बहुत दु:खदायी और क्लेशदायक है बहुत बड़े समय में वह घुल घुल कर खत्म हुआ। कसाई की छुरी के नीचे कोई पशु थोड़ी देर तड़प-तड़प कर खत्म हो जाता है लेकिन भीतर के नीच भावों की छुरी के नीचे कोई आत्मा सैकड़ों वर्षों तक तड़प-तड़प कर और हाय हाय करके खत्म होता है। इसलिए शरीर की जिन्दगी को असार और बहुत थोड़े दिनों के लिए समझो। धनी होकर जिये तो क्या, निर्धन होकर जिये तो क्या? लोगों ने आकर सलामें की, तो क्या? आप जाकर औरों को सलामें की तो क्या? असल बात ये है कि आत्मिक जीवन को लाभ करो। आत्मिक जीवन को लाभ करने के बिना दुनियाँ का सारा ही

साजो - समान निष्फल है। आत्मिक जीवन को जो प्राप्त हो जाते हैं, धर्म के जीवन को जो लाभ कर लेते हैं, उनके बराबर कोई सौभाग्यवान नहीं, कोई सुखी नहीं। ये नज़ारा तुम्हारे सामने है। एक ओर मृत्यु है और दूसरी ओर जीवन है। अब जो तुम्हें पसंद है, उसे लाभ करो। तुमको आने वाले भयानक दु:खों और क्लेशों का भागी देखकर मेरा हृदय चैन नहीं पाता। जो दु:ख और क्लेश मुझे नज़र आते हैं वो तुमको दिखाई नहीं देते। अपनी जिन्दगी के एक - एक मिन्ट और सैकिंड की कदर करो। इसको यूँ ही व्यर्थ बर्बाद मत करो। अपनी बाकी की जिन्दगी को अपने कल्याण के लिए खर्च करो। ऐसा आर्शीवाद तुम्हें प्राप्त हो।

जीवन का भेद खोल देने वाली ज्योति यदि किसी को प्राप्त न हो और उसको पाने के लिए किसी के अन्दर अकांक्षा न हो और अनुकूल सामान प्राप्त न हों, तो वह चाहे राज्य सिंहासन पर बैठा हो, हज़ारों लाखों की फौज उसके पास हो, करोड़ों और अरबों रुपया उसके पास जमा हो, धर्मशास्त्रों, कुरान और बाईबल का वह अनुगत समझा जाता हो, धर्म - धर्म पुकारता हो, धर्म के नाम से कितने ही प्रकार के सवाँग भरता हो मस्जिद और मन्दिरों में जाकर पूजा और नमाज़ का सवाँग भरता हो, दान पुण्य करता हो लेकिन हकीकत को दिखाने वाली रौशनी से खाली हो तो उस जैसा अभागा और कौन हो सकता है। केवल यही नहीं कि वह अपना शत्रु आप है बल्कि उसके हाथ में जितने अधिक पृथ्वी के सामान और सम्बन्धी हों वह उन सबका गला काटने वाला है।

यदि कोई जन अपने आपको ही न जाने तो इसमें क्या सन्देह है कि चाहे उसको कैसी ही सुन्दर देह मिली हो, वह कितना ही बड़ा मर्तबा रखता हो, कितना ही धन उसके पास हो, कितने ही लोग आकर उसको सलामें करते हों, कितने नौकर हाथ बांध हर समय उसके आगे खड़े रहते हों, कितने ही सुखों और स्वादों के सामान उसके पास मौजूद हों लेकिन चूंकि वह अपने आप से बेहोश है, इसलिए जितनी अधिक सामग्री उसके पास है, इसी बेहोशी के कारण वो इस सारी सामग्री के द्वारा अपने लिए सुखों की बजाय दु:ख खड़े कर लेता है। यही कारण है कि इस संसार से जाने पर वो जितना अधिक धनी मर्तबे वाला है, जितने अधिक सुखों के सामान अपने पास रखता है, उतनी ही अधिक उसकी दुर्दशा होती है। उतनी ही अधिक उसके लिए अजाब, दु:ख और क्लेश पैदा हो जाते हैं। कल जो इस धरती पर राजे और महराजे थे, हजारों और लाखों पर हुकूमत करते थे, सैकड़ों नौकर चाकर रखते थे, यहाँ परलोक में जो कुछ उनकी दुर्दशा हो रही है, उनके नौकरों की उतनी दुर्दशा नहीं हो रही घोड़ों पर जो चढ़े फिरते थे, आज उनकी जो बुरी हालत हो रही है, वो उनके साईसों की नहीं हो रही। ये सच है कि उन नौकरों की भी हालत कोई अच्छी नहीं, लेकिन जितने भयानक अजाब और क्लेश उनके मालिक भोग रहे हैं, वो नौकर उतने अज़ाब और क्लेश नहीं भोग रहे। हाय! मनुष्य जन्म पाकर आत्म - बोध को पाने के बगैर मनुष्य की कैसी महा कृपा पात्र और अधम अवस्था !

सत्य धर्म बोध उत्सव

जैसा कि पहले बताया गया था, इस वर्ष सत्य धर्म बोध उत्सव 23, 24, 25 सितम्बर को बहुत चाव भाव से मनाया गया। धर्म सम्बन्धियों की सुविधा के लिए यह फैसला किया गया जो बहुत लाभ दायक रहा। उत्सव से पहले धर्म सम्बन्धियों ने बहुत सुन्दर हाल को सजाया हुआ था। दिवारें उच्च धर्म सम्बन्धियों की फोटोज़ से सुसज्जित थी। देव समाज मन्दिर सिरसा और मल्लेका के बीच मल्लेका से तकरीबन 1 किलो मीटर सिरसा की ओर बड़ी सड़क पर बनाया गया है। सेहन बहुत सुन्दर पौधों से सुसज्जित था। सारी सजावट बहुत सुन्दर और सादगी से की गई थी। जिसे देखकर सब धर्म सम्बन्धी बहुत खुश हुए। चण्डीगढ़ से माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी, सुरजीत जी, सतिन्द्र ढिल्लों, जलधर जी, बलविन्द्र कौर जी आदि 7 - 8 जन पधारे। संगरूर, गोनियाना, कल्याण, भटिंडा, हिसार, गंगानगर, गजसिंह पुरा, पदमपुर, देहरादून आदि स्थानों से पधारे। डाक्टर जयरथ जी अपनी पत्नी और रजिन्द्र जी के साथ बारिश में 8 - 8.30 घण्टे का सफर तय करके आए जिन्हें देखकर बहुत खुशी हुई। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के आने की किसी को आशा नहीं थी, पर उन्हें देखकर सबको खुशी और उत्साह मिला, श्रीमान जी भी धर्म सम्बन्धियों को मिलकर धन्य धन्य हो गए। सारा वातावरण खुशी और उत्साह से भरा हुआ था। सारी सभाओं में 80 से 100 तक की हाज़री रही। सभाओं में भजन गुरूदेव राज जी और गौतम जी ने गाए। सुरजीत जी और सतिन्द्र जी तकरीबन सब सेवकों के घर गई। उनके घरों के फूल पौधे देव समाज के सेवक होने का एहसास दिलाते थे। उन्हें मिलकर सबको बहुत खुशी हुई।

प्रवेश सभा, शाम 5.00 बजे : - सभापति श्रीमान गौतम जी। भजन के गान के बाद, परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई।

सभापति जी ने बताया कि सत्य धर्म को समझने से पहले नेचर को समझना आवश्यक है। नेचर के परिवर्तन की घटनाएं नियम - बद्ध हैं। उन्होंने सत्य धर्म की शिक्षा के द्वारा आए एक परिवर्तन की घटना बताई। सत्य धर्म बोध उत्सव की विशेषता बताते हुए, इस उत्सव में शामिल होने वाले जनों का खड़े होकर स्वागत किया और श्रीमान गुरूदेव राज जी ने जोश से भरकर आने वालों जनों के स्वागत सम्बन्धी भजन गाया। इस सभा में 100 के लगभग जन शामिल हुए। पहली सभा से गुरू महाराज के प्रभावों का असर दिखने लगा था। सभाओं से लाभ उठाने की चन्द शर्ते बताई।

24.9.2022, पहली सभा, सुबह 8.30 बजे। सभापति जी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ। सभापति जी ने एक मल्लाह की उदाहरण दी। जैसे तैरना न आने पर एक विद्वान की ज़िन्दगी बर्बाद होती है वैसे ही आत्म बोध के बिना मनुष्य की पूरी ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है। मनुष्य को तो शरीर का ही बोध नहीं आत्मा का बोध दूर की बात है। हमारी चिन्ताओं और क्रियाओं के द्वारा हमारे भीतर कौन सा परिवर्तन आ रहा है। इसके बिना निस्वार्थ भाव से सेवा करना नीच अनुरागों व नीच घृणाओं से मोक्ष पाना और उच्च भावों में विकास पाना ही आत्म बोध है नहीं तो हमारा जीवन खतरे में है।

दूसरी सभा - आदेशों का पाठ, इसको श्रीमान राधेश्याम जी ने बहुत विद्वतापूर्वक अता

किया। उन्होंने पहले शरीर के सम्बन्ध में बहुत उपयोगी नियमों को बताया जिन्हें पालना करके ही शरीर को ठीक रख सकते हैं और अच्छी गतियां करने के योग्य होते है। उन्होंने बताया कि इस सत्य धर्म बोध उत्सव का दूसरा नाम स्वास्तित्व यज्ञ है। स्वास्तित्व में हमारा शरीर और आत्मा दोनों आते हैं। उन्होंने आदेशों को विस्तार पूर्वक बताया। उनमें गजब का उत्साह और जोश था। वह मल्लेका जाते रहते हैं। वहां के लोग उनका बहुत सम्मान करते हैं।

तीसरी सभा - शाम 5.00 बजे। सभापति - श्रीमति सुरजीत बरार। विषय : भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का कारज। पहले पियूश जी द्वारा गाया हुआ भजन "श्री देवगुरू भगवान ने हमें क्या से क्या है बना दिया" बजाया गया, जो बहुत प्रभावदायक मण्डल बनाने में सहायक हुआ।

फिर सभापति जी ने बताया कि राजों, महाराजों ने बड़े-2 किले फतह किए हैं अपनी महत्वअकांक्षाओं को पूरा करने के लिए। गुरू महाराज ने मनुष्य के पापों, मिथ्याओं, घमंड़, नीच कामनाओं, ईर्षा, द्वेष और स्वार्थ से भरे हुए हृदयों पर फतह की है। फिर उन्होंने बताया कि कैसे बड़े 2 सत्संग होते थे थराज और समाध भाई में। उनमें कैसे बड़े 2 पापी बदले जिनमें विशेषकर नम्बरदार गुरुबचन सिंह जी, रूप चन्द जी, श्रीमान सुरजन सिंह जैसे मज़बूत किलों को फतह किया गुरू महाराज के प्रभावों की यह करामातें दिलों को छू रही थी।

उसके बाद श्रीमान राधे श्याम जी ने इसी विषय को और विस्तार से बताया। और एक जन के भीतर एक पुस्तक के पाठ से ही जो परिवर्तन आया, उसको विस्तारपूर्वक बताया यह सारी सभा में गुरू महाराज के देव प्रभावों के द्वारा जो करिश्में हुए है। उनकी कुछ झलक उपस्थित जनों ने देखी।

25 सितम्बर, सुबह 8.30 बजे, सभापति बलबहादुर सिंह जी। विषय : भगवानदेवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज। सभापति जी ने नीच जीवन और उच्च जीवन की बहुत सुन्दर व्याख्या की। लड़कियों को मारना, जैसा सरदार हरनाम सिंह जी के घर में होता था, नीच जीवन था। लड़कियों के लिए स्कूल खोले यह परिवर्तन गुरू महाराज के प्रभावों ने किया यह उच्च जीवन था। श्रीमति धर्म प्यारी जी को इन प्रभावों ने इतना बदला कि कनल जी कहते थे, जब श्रीमति जी आ जाती हैं हम गीदड़ों से शेर बन जाते हैं। श्रीमान जी ने अपने नीच जीवन के परिवर्तन का ज़िकर किया।

नये सेवक ग्रहण - दो सौभाग्यवान जनों को सेवक बनाया गया - श्रीमान मोहन जी गजसिंह पुरा, दूसरा श्रीमान जगीर सिंह जी के छोटे भाई। इसके बाद भाव प्रकाश की सभा हुई

भाव प्रकाश

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभाओं की संक्षिप्त व्याख्या करके उपस्थित जनों की भाव प्रकाश करने के लिए आमन्त्रित किया।

1 - श्री रजिन्द्र जी देहरादून : मैं कल्याण गांव को प्रणाम करता हूं यहां मेरा भला हुआ था। मैं पांच छः बंडल सिग्रेट पीता था और बहुत शराब पीता था। मैं डाक्टर जी को लेकर आया हूँ, आगे भी लेकर आऊंगा। इस दर की वजह से मेरे घर में आर्थिक तौर पर खुशहाली आई है।

2 - श्रीमान जंगीर सिंह जी - मैं श्रीमान सुखदेव सिंह जी का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मेरे भाई को सेवक बनाने के लिए तैयार किया।

श्रीमान जी ने 22 से जो सभाएं कराई उससे मेरा बहुत भला हुआ। अहं अनुराग के संबंध में सेवक बनने के 27 साल बाद कुछ दिखाई दिया है। अहं के कारण मैं दूसरों की कीमत नहीं लगाता।

3 – श्रीमान शंभूजी – मैं श्रीमान जी के यहां driver हूँ। मैं जब पहली बार कल्याण आया था तो सरताज जी ने कहा था कि आप ठीक जगह आ गए हो आपका बहुत भला होगा। श्रीमान जी ने मुझे घर बनाकर दिया है। मैं श्रीमान जी की और अधिक सेवा करूंगा। (आपने श्रीमान जी और श्रीमती सुरजीत बराड़ जी की सेवाओं का वर्णन किया)

4 – श्रीमान बूटा सिंह जी – मैंने यहां आकर लाभ उठाया है। श्रीमान गुरबख्श सिंह जी, श्रीमान जी और श्रीमान बलबहादुर जी मेरे उपकारी है। मुझे कल्याण में समाज के स्कूल की सेवा करने और वहां के अध्यापको की सेवा करने का अवसर मिला हुआ है। इस गुरु ने मुझे यकीन के योग्य बनाया है।

5 – श्रीमती सतिन्द्रर ढिल्लों जी – मैं बाई जी और बहन जी की धन्यवादी हूं कि जो मुझे यहाँ लेकर आए हैं। मेरे पिता जी के मेरे पर बहुत उपकार हैं। मंदिर में सेवा करने वालों को धन्यवाद देती हूँ। सभाओं से बहुत लाभ हुआ है। राधे शाम जी की सभा से बहुत ज्ञान मिला है। कालेज में नौकरी के दौरान की कुछ घटनाएं सामने आई हैं।

6 – श्रीमान जसविन्द्र जी – देव समाज में 2012 तक लाभ उठाता रहा। पर फिर एक पार्टी में शामिल हो गया और आठ साल खराब कर दिए। अब देव समाज की पुस्तकें पढ़ता हूँ। हमें आदमी के साथ नहीं भगवान के साथ जुड़ना चाहिए।

7 – श्रीमान जलधर जी – मैं बहन जी का धन्यवाद करता हूँ जो मुझे सत्संग में लेकर आए। मुझे बहुत लाभ हुआ। पहले मुझे लगता था कि मुझे सब आता है अब इस उत्सव से बहुत कुछ सीखा है। मंदिर को देखकर बहुत खुशी हुई है।

8 – श्रीमान गोपाल जी – अपने आपको हम ठीक समझते हैं, पर ऐसा नहीं है। यहां आकर अपना काला ओर खराब रूप नज़र आया है। यहां से बहुत सेवाएं पाई हैं। मैं पुस्तकों की सेवा करना चाहता हूँ।

9 – श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेका – मुझे हमारे गाँव में श्रीमान जी और बहन जी के आने की बहुत खुशी है। मैं एक रिश्तेदार बच्ची की मदद कर रहा हूँ आगे और भी करूँगा।

अंत में सभापति जी ने सबका धन्यवाद किया। और पूजनीय सभापति भगवान और सहकारी शक्तियों का धन्यवाद किया। देव आरती और जय ध्वनि के साथ यह उत्सव सम्पन्न हुआ। 21500 के लगभग दान एकत्रित हुआ।

पाठकों के विचार

"आप के पाक चरणों में सतगुरू, हमारा सर झुकाने के काबिल नहीं"

सम्मान के योग्य बड़े श्रीमान जी की इतवार की सभाओं में दी हुई विशेष प्रेरणाएँ व बातें याद आती हैं कि हमारी सब प्रार्थनाएँ व भजन बहुत हद तक निरर्थक होती हैं क्योंकि यह सब हम रटे रटाए कर रहे हैं, ऊपर के मन से कर रहे हैं। हमारे दिल की तड़प, लग्न व आकर्षण कहीं और होता है परन्तु ऊपर से हम गान कर रहे होते हैं कि "बचाओ तुम मुझे सत्गुरू" इसमें हम न तो अपने आप को डूबा हुआ महसूस करते हैं न ही अपनी किसी हीन

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

अथवा नीच गति का कोई दु:ख ही होता है तो फिर उसके लिए हमारी इस प्रकार की प्रार्थनाओं का भी महत्व ही नहीं रह जाता।

अगस्त माह की धर्म-जीवन पत्रिका का हर एक लेख बहुत शानदार व नया रूप लिए हुए महसूस हुआ।

इसमें पहला श्रीमान गौतम जी का लेख 'अपने जीवन का फिकर' बहुत सुन्दर सटीक लहजे में तैयार किया हुआ है, बहुत बहुत खुशी हुई व उनके लिए बहुत शुभकामनाएं निकलती हैं कि वे इस प्रकार का सात्विक कार्य करके हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत बन रहे हैं। इससे आगे P.V. कनल जी का लेख 'रूहानी रोशनी के प्रकाश में' जो उन्होंने अपने जीवन की घटनाएं पेश करके गुरू की रोशनी और प्रभावों को पेश किया है वह उनके चरणों में सदा ही झुकने को मजबूर करता है।

इस पत्रिका में मल्लेका पिछले सत्संग का हाल व जो भाव प्रकाश प्रकाशित किए गए हैं उन्हें पढ़कर काफी हद तक दिल बाग-बाग हो गया जैसे कि सत्संग में खुद शामिल होने की अनुभूति हुई व गुरू महाराज के प्रभाव जो कि धर्म सम्बन्धी प्राप्त करते हैं, उसका हाल पाकर दिल गुरू के आगे नमन करता है। विशेष तौर पर बड़े श्रीमान जी का धर्म सम्बन्धियों को मिलकर भाव-प्रकाश कि "जित्थे मिले गुरू सिक्खड़ा, झुक-झुक लागूं पाऐं" इस प्रकार का सारा ब्यान ही उनका बढ़प्पन, उसकी विशेष दीनता जिसे अनुभव कर उनके चरणों में दिल बार-बार झुकने को मजबूर होता है व उनके मुकाबले में अपने हृदय की शुष्क अवस्था व कंगाल, और नीचता से भरी हुई अवस्था सामने लाकर अपने ऊपर दु:ख भी होता है।

पत्रिकाओं में गुरू महाराज की स्वयं की वाणी कई जगह पेश की जाती है जो कि अपनी अति तुच्छ व नीच अवस्था में यह असर डालती है कि मैं बहुत बार गुरू महाराज की वाणी को मोटे रूप से बुद्धि से समझने में भी अपने आपको अयोग्य पाता हूँ और अपने दिल का तो मेल उससे बिलकुल भी न पाकर अपनी तरफ बहुत शर्म महसूस करता हूँ।

-अति तुच्छ और कंगाल गोपाल

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- ***Dev Samaj Global****, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts